Prabhat Khabar (Date: - 14/02/2020)

अतीत की पुनर्स्थापना • **विश्वविद्यालय की बन रही वैश्विक पहचान**

नालंदा विवि में 60 फीसदी छात्र विदेशी

राजदेव पांडेय ▷ पटना

नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या में उत्साहजनक इजाफा हुआ है. वर्तमान में विश्वविद्यालय में पूर्णकालिक कोर्स में 100 से अधिक और अल्पकालिक पाठ्यक्रमों में 650 से अधिक विद्यार्थी हैं. यह संख्या इसलिए अहम है कि वर्ष 2014-16 के फर्स्ट बैच में केवल 15 विद्यार्थी थे. 2016-18 के बैच में कुल विद्यार्थियों की संख्या 130 थी.

विश्वविद्यालय की स्थापना में बेशक दुनिया के केवल 17 देशों ने मिलकर योगदान दिया है, लेकिन वर्तमान में इसकी पहचान वैश्विक हो चुकी है. विदेशी विद्यार्थियों में सर्वाधिक अमेरिका, कनाडा, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीकी व लैटिन अमरीकी देशों के हैं. यहां पढ़ने वाले पूर्वी एशिया के विद्यार्थियों की संख्या भी उत्साहजनक है. वहीं, विश्वविद्यालय में विदेशी शिक्षकों की संख्या अभी तीन है. इस तरह यहां उच्चस्तरीय • बाकी पेज 17 पर

15 से बढ़कर 750 हो गये हैं विद्यार्थी, इनमें 50% लड़कियां

नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय का नवनिर्मित प्रशासनिक ब्लॉक.

विद्यार्थियों के सबसे पसंदीदा सब्जेक्ट

बुद्धिस्ट स्टडी व तुलनात्मक अध्ययन : इसकी पढ़ाई के लिए खासतौर पर इटली, फ्रांस, जर्मनी से विद्यार्थी आ रहे हैं. पूर्वी एशिया के विद्यार्थियों की भी इसमें खासी रुचि है.

इन्वायरमेंट साइंस : भूटान, अमेरिका, इंग्लैंड जैसे देशों के विद्यार्थियों की पसंद है.

इतिहास : प्राचीन इतिहास के अध्ययन के लिए दक्षिण अफ्रीका, घाना, तंजानिया आदि अफ्रीकी देशों के अलावा लैटिन अमरीकी देशों मसलन चिली, मैक्सिको, ब्राजील से विद्यार्थी आ रहे हैं.

तीन विशेष स्टडी सेंटर इसी साल से

2014-15 में सिर्फ दो स्टडी सेंटर- स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडी व स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड इन्वायरमेंटल स्टडी थे. अब इनकी संख्या बढ़कर पांच हो गयी है. तीन विशेष स्टडी सेंटर इस साल शुरू होंगे.

जल्दी ही विद्यार्थियों की संख्या और बढ़ेगी. नये कोर्स आ रहे हैं. हालांकि, हमारा पूरा फोकस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर है. विश्वविद्यालय तेजी से आकार ले रहा है. हॉस्टल आदि बन जाने के बाद विद्यार्थियों की संख्या में अपने आप इजाफा हो जायेगा.

-प्रो सुनैना सिंह, कुलपति, नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नालंदा

Prabhat Khabar (Date: - 14/02/2020)

पटना जिले में 200 किलोमीटर दायरे में लगेंगे 4.22 लाख पौधे

प्रभात खबर

खास

- **वित्तीय वर्ष 2020-21 में पालीगंज में सबसे अधिक 28 हजार 198 पौधे लगाने का लक्ष्य**

नितिश ▷ पटना

जल-जीवन-हरियाली के तहत मनरेगा अंतर्गत पटना जिला के विभिन्न प्रखंडों में वित्तीय वर्ष 2020-21 में 4.22 लाख पौधे लगाये जायेंगे. पालीगंज प्रखंड में सबसे अधिक 28,198 पौधों को लगाने का लक्ष्य है. इसमें एक लाख 50 पौधे सड़क किनारे, 2,57,600 पौधे निजी भूमि पर और 64,400 पौधे जल संरचनाओं के किनारे लगेंगे. खास बात यह है कि इस बार सबसे अधिक आम के पेड़ लगाने की योजना है. इसके बाद दूसरे नंबर पर जामुन व तीसरे नंबर पर महोगनी के पेड़ लगाये जायेंगे. ये सभी पेड़ 200 किलोमीटर के दायरे में लगाये जायेंगे. साथ ही इस बार सबसे अधिक फलदार पौधों को लगाने की योजना है. कुल 155160 पौधे लगाये जायेंगे. जबकि 153220 लकड़ी के पौधे व 113670 पौधे जैव विविधता वाले लगाये जायेंगे. हालांकि इन पौधों की संख्या में आंशिक बदलाव किया जा सकता है.

वन विभाग को दो करोड़ पौधे की जिम्मेदारी : वन विभाग को दो करोड़ पौधे तैयार करने की जिम्मेदारी दी गयी है. क्योंकि, इतनी संख्या में लगाने के लिए पौधों की जरूरत पड़ेगी. यह तभी संभव है जब पौधों को तैयार किया जाये. विदित हो कि वित्तीय वर्ष 2019-20 में एक लाख 94 सौ पौधे लगाने का लक्ष्य है. उक्त लक्ष्य को लगभग पूरा कर लिया गया है.

जल-जीवन-हरियाली योजना का हाल

लकड़ी को लगे पेड़ों की संख्या

महोगनी	43000
सागवान	41000
कदम	19170
ग्रीन सेमल	16700
अशोक	16650
बड़हर	10000
बरगद	2700
पीपल	2000
बकेन	2000

फलदार पौधों की संख्या

आम	77500
कटहल	30000
अमरूद	20000
इमली	10660
बेल	10000
महुआ	2000

जैव विविधता वाले पौधों की संख्या

नीम	19190
अर्जुन	16680
आंवला	25600
जामुन	52200

प्रखंडवार पौधे लगाने का लक्ष्य

प्रखंड	पौधे
अथमलगोला	10669
बख्तियारपुर	22534
बाढ़	18983
बेलछ	13300
बिहटा	28885
विक्रम	20210
दानापुर	13000
दनियावां	8773
धनरूआ	28745
दुल्हिन बाजार	16435
फतुहा	22154
घोसवरी	11251
खुसरूपुर	8000
मनेर	25560
मसौढ़ी	25138
मोकामा	15000
नौबतपुर	21465
पालीगंज	28198
पंडारक	22635
पटना सदर	10485
फुलवारी	17565
पुनपुन	23758
संपतचक	9310

Prabhat Khabar (Date: - 14/02/2020)

सारण की बेटी का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

दिघवारा (सारण). सारण जिले की बेटी ने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज करा कराया है. दिघवारा प्रखंड के मलखाचक गांव निवासी अमरनाथ सिंह की बेटी स्मृति सिंह उर्फ शिल्पी ने अमेजन प्राइम वीडियो के देशभक्ति पर आधारित गीत गायन में भाग लेकर यह उपलब्धि हासिल की है. अमेजन प्राइम की ओर से पिछली 24 जनवरी को गणतंत्र दिवस के पूर्व सबसे अधिक म्यूजिशियन की संख्यावाले बैंड को फॉर गौटेन आर्मी गाने पर परफॉर्म कराया गया. इस गाने को सिंगर प्रीतम ने कंपोज किया, जो कबीर खान की आने वाली फिल्म फोर गौटेन आर्मी के लिए लाइव गीत रिकार्ड किया. रिकार्ड होते ही यह गीत विश्व रिकॉर्ड में शामिल हो गया. बता दें

कि मुंबई के होटल ट्यूलिप में इस लाइव परफार्मेंस में 1046 म्यूजिशियन ने अपनी सहभागिता निभायी. जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में लार्जेस्ट इंडियन सिनेमा बैंड के रूप में दर्ज किया गया. इस बैंड में दिघवारा प्रखंड के मलखाचक के निवासी अमरनाथ सिंह की पुत्री स्मृति सिंह उर्फ शिल्पी को भी वोकलिस्ट के रूप में शामिल होने का मौका मिला.

Prabhat Khabar (Date: - 14/02/2020)

धरोहर • बौद्ध धर्म में परनाश्वरी देवी को माना जाता था उपचार की देवी, इतिहासकारों में उत्साह

लाली पहाड़ी की खुदाई में मिली परनाश्वरी की मूर्ति

संवाददाता ▷ लखीसराय

इससे पहले गया जिले के वजीरगंज थाने के कुर्कीहार में मिली थी मेटल की मूर्ति

लाली पहाड़ी की खुदाई के दौरान गुरुवार को उत्तरी पूर्वी छोर से बौद्धकाल में उपचार की देवी मानी जाने वाली परनाश्वरी देवी की साढ़े तीन सेंटीमीटर की पत्थर की मूर्ति मिली. इससे विश्व भारती शांति निकेतन के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अनिल कुमार समेत शोध कर रहे छात्र उत्साहित हैं. डॉ कुमार ने बताया कि देश में अब तक जहां भी बौद्ध महाविहार को लेकर खुदाई की गयी है, उनमें लाली पहाड़ी में ही सिर्फ पत्थर की मूर्ति मिली है. इससे पहले गया जिले के वजीरगंज थाने के कुर्कीहार में हुई खुदाई में मेटल की मूर्ति मिली थी. उन्होंने कहा कि परनाश्वरी देवी को बौद्ध धर्म के लोग उपचार की देवी माना जाता था.

खुदाई स्थल को दिखाते विश्व भारती शांति निकेतन के विभागाध्यक्ष डॉ अनिल.

परनाश्वरी का मतलब 'पतियों में सजे हुए कपड़े'

डॉ अनिल ने बताया कि परनाश्वरी का है 'पतियों में सजे हुए कपड़े' और वह चिकित्सा के प्राकृतिक तरीकों से उनके संबंध का प्रतीक है. बौद्ध मत के अनुसार, ब्रह्मांड में एक उपचार शक्ति है जिसे हीलर की क्षमताओं के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है. परनाश्वरी की उपचार शक्ति का ध्यान, अनुष्ठान या देवी के मंत्र का जाप करने के माध्यम से किया जाता है. इक्कीस तारस में से एक अवतार के रूप में, वह 'पर्वत एकांत में परनाश्वरी के रूप में जानी जाती है, जो संक्रामक रोगों को दूर करती है'. भारतीय परंपरा में परनश्वरी को कमल मुद्रा (पद्मासन) में दरसाया गया है. तिब्बती योग की परंपरा के अनुसार, यह शरीर में चिकित्सा शक्तियों को जागृत करता है और चेतना की उच्च अवस्था की ओर ले जाता है. परनाश्वरी देवी की मूर्ति मिलने से यह साबित हो रहा है कि उस समय यहां रहनेवाले लोगों का तिब्बत से जुड़ाव रहा होगा.

खुदाई के दौरान मिली परनाश्वरी देवी की मूर्ति.

Hindustan (Date: - 14/02/2020)

आईआईटी पटना ने बनाया हाईड्रोजन गैस सेंसर, कीमत 15 रुपए

उपलब्धि

बिहटा/पटना | हिन्दुस्तान टीम

आईआईटी पटना के शोधकर्ताओं और फैकल्टी मेंबर ने एक अत्यंत सस्ती लेकिन अत्यंत संवेदनशील हाईड्रोजन गैस सेंसर विकसित किया है। यह काफी लचीला, लेकिन काफी ठोस है। यह कहीं भी फिट हो हो सकता है। पूरी दुनिया में पहली बार पीबीवीएफ मैटेरियल से सेंसर बनाने में सफलता मिली है। यह मैटेरियल नॉन-टॉक्सिक होता है और यह स्कीन में भी फिट हो जाएगा। इस सेंसर की खासियत है कि यह वातावरण में मौजूद एक अरब पार्टिकल में एक पार्टिकल भी हाईड्रोजन की मौजूदगी को सेंस कर लेगा जबकि अभी तक जो सेंसर मौजूद है, वह 10 लाख पार्टिकल में एक पार्टिकल हाईड्रोजन के रहने पर सेंसर करता है। ऐसे में नया विकसित सेंसर अत्यंत शक्तिशाली है। यह सेंसर इतना छोटा है कि मनुष्य की त्वचा में भी फिट हो जाए। चूंकि नॉन-टॉक्सिक पदार्थ से बनाया गया है, इसलिए यह हानिकारक भी नहीं है। सेंसर विकसित करने वाले पीएचडी के छात्र दीपक पुनेठा ने बताया कि यह सेंसर पीबीडीएफ, आरजीओ (री-डयूस ग्राफीन ऑक्साइड) और एसएनओ टू (टिन ऑक्साइड) से मिलकर बनाया गया है। भविष्य में दूसरी गैस का सेंसर बनाने को भी इस फॉर्मूले का इस्तेमाल किया जा सकता है।

01
अरब में हाईड्रोजन का एक पार्टिकल भी रहेगा तो सेंसर पहचान लेगा

10
से 15 रुपए लैब की कीमत, बाजार में उपलब्ध सेंसर की कीमत दो से ढाई हजार

- अब तक उपलब्ध सेंसर की क्षमता एक मिलियन पर एक पार्टिकल की है

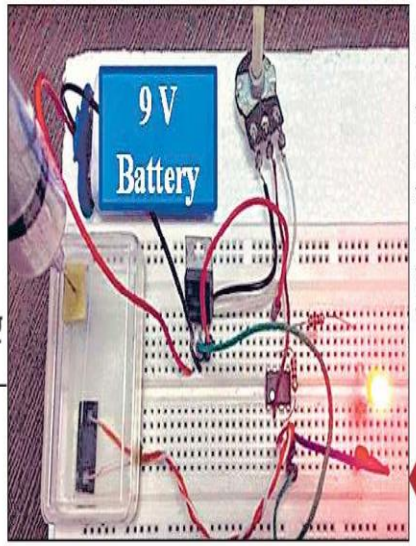

आईआईटी पटना के शोधार्थी छात्रों और फैकल्टी मेंबर द्वारा बनाया गया हाईड्रोजन गैस सेंसर। • हिन्दुस्तान

अत्यंत विस्फोटक होता है हाईड्रोजन

हाईड्रोज के वैसे तो कई फायदे हैं, लेकिन यह ज्वलनशील होता है। यदि यह कहीं जमा हो जाए तो वहां विस्फोट हो जाएगा। इस गैस की खासियत होती है कि यह रंगहीन, स्वादहीन और गंधहीन होती है। इसके पार्टिकल का आकार अत्यंत छोटा है। इसलिए इसे पहचानना मुश्किल होता है।

तीन सदस्यीय टीम ने किया है शोध

इस आविष्कार के शोधकर्ता दीपक पुनेठा है जबकि गाइड इलेक्ट्रिकल विभाग के प्रो. सौरव कुमार पांडेय ने की है। इस टीम में भौतिकी के प्रो. मनोरंजन कार भी शामिल हैं।

भविष्य में ई-स्कीन के लिए बेहतर

दिन प्रति दिन वातावरण दूषित हो रहा है। ऐसे में यह सेंसर ई-स्कीन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यह इतना लचीला है कि बॉडी में कहीं भी फिट हो सकता है। आसपास कहीं हाईड्रोजन गैस होगी तो यह सेंसर कर लेगा। अब तक जो सेंसर उपलब्ध हैं वो लचीला नहीं है। नया विकसित सेंसर काफी सस्ता है। बिना पैकेजिंग के इसके लैब में निर्माण की कीमत 10 से 15 रुपए है जबकि अभी उपलब्ध हाईड्रोजन सेंसर दो से ढाई हजार रुपए है।